सुझाव

सुझाव

अभिभावकों को छात्रों को पढ़ाई करने के लिए प्रवृत्त करना चाहिए। निर्धारित पाठ्यपुस्तक में से हर एक पाठ को पढ़ने के लिए प्रवृत्त करना चाहिए। प्रतिदिन छात्रों को अभ्यास करने के लिए प्रवृत्त करना तथा प्रश्नोंत्तर पूछना चाहिए। प्रधानाध्यापक जी को दैनिक समाचार पत्रिका मँगवाना चाहिए। पढ़ने के लिए स्वतंत्र कमरे की सुविधा करनी चाहिए। छात्रों को हिंदी में अभिव्यक्त करने के लिए प्रवृत्त करना चाहिए। इस प्रकार करने से छात्रों की हिंदी समृद्ध बन सकती है।

आजकल परीक्षा को महत्त्व देकर पढ़ाई होती है। छात्रों को हिंदी के विभिन्न विषय देकर प्रतियोगिताएँ आयोजित करनी चाहिए। जो विषय लिखे हैं, उसे सामूहिक रूप से पाठशालाओ में प्रकट करना चाहिए। उसका अमल करने के लिए प्रधानाध्यापक जी ने अध्यापकों को प्रेरित करना चाहिए। भाषिक एवं आशय की दृष्टि से छात्रों की तैयारी हो जाती है। छात्र स्वयं अध्ययन करने तथा परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए माहिर हो जाते हैं।

छात्रों को प्रकट वाचन करने के लिए प्रवृत्त करना चाहिए। प्लीज एंगेज के समय तथा एखाद तासिका प्रकट वाचन के लिए देनी चाहिए। राष्ट्रभाषा परीक्षा में छात्रों को सम्मिलित कराना चाहिए। उससे भी छात्रों की हिंदी के प्रति रुचि बढ़ सकती है। छात्र हिंदी बोल सकते हैं, लिख सकते हैं। परीक्षा को महत्त्व न देते हुए भाषा एवं आशय को महत्त्व देकर पढ़ाना चाहिए, ताकि भाषा एवं आशय समृद्धि हो सकती है।

जैसे पहली कक्षा से अंग्रेजी की पढ़ाई शुरु की है वैसे पहली कक्षा से हिंदी को भी शुरु करनी चाहिए। भाषा के अभ्यास के लिए वाचन महत्वपूर्ण है। छात्र जितना अधिक समझकर पढ़ता है, उसे उतना आशय समझ में आता है। अधिकांश छात्र सिर्फ गाईड पढ़ते हैं, पुस्तक नहीं पढ़ते हैं, इसलिए छात्रों को पुस्तक की पढ़ाई करना जरुरी है। सस्वर वाचन, मौन वाचन अपेक्षित है। छात्रों को हिंदी विषय की पढ़ाई के लिए पठन क्षमता प्राप्त करनी चाहिए। हिंदी अध्यापकों को छात्रो के साथ, छात्रों को अध्यापकों के साथ हिंदी में बोलना चाहिए। उसका अभ्यास करा लेना चाहिए। अध्यापकों को आठ-दस पंक्तियों में उत्तर कहने तथा लिखने के लिए

छात्रों को प्रेरित करना चाहिए।

शिक्षक-प्रशिक्षकों को गद्य, पद्य, रचना, व्याकरण आदि पर बल देकर अध्यापन पाठ लेना चाहिए। अध्यापन कौशल विकसित होने के लिए पाँचवीं से दसवीं तक की पाठ्यपुस्तकों का अनुशीलन करना चाहिए।

सुझावों को पूरे प्रयास के साथ अमल में लाया जाए, तो छात्रों का हिंदी भाषा एवं आशय का विकास हो सकता है।